PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ३

# दीदी, दीदी, बादल क्यों गरजते हैं?

Author: Roopa Pai

Illustrator: Greystroke

Translator: Shobhit Mahajan

दीदी, दीदी, कभी-कभी मैं सोचता हूँ...
क्या सोचते हो मुन्ने राजा, तुम क्या सोचते हो?
कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि बादल क्यों गरजते हैं?
तो, तुम इस सोच में डूबे रहते हो?
अच्छा, तुम बताओ।
क्या लगता है तुम्हें? बादल क्यों गरजते हैं?
मुझे लगता है, मुझे लगता है...
बताओ भी न मुन्ने राजा, क्या लगता है तुम्हें?

मुझे लगता है कि आकाश में एक बड़ा दानव, शायद कुंभकर्ण, सोया हुआ है,
बारिश की मूसलाधार बूँदें जब उस पर ज़ोर-ज़ोर से पड़ती हैं,
और उसे गहरी नींद से झकझोर कर उठा देती हैं,
तब वह गुस्से में, आँखों से अंगारे उगलता हुआ, उठता है,
पैरों को ज़ोर-ज़ोर से पटकते हुए शेर जैसी दहाड़ मारता है।

(दीदी, क्या उसकी अम्मी उसकी पिटाई नहीं करतीं? अगर घर पर मैंने कभी ऐसे गुस्सा दिखाया तो अम्मी तो मेरी कस कर पिटाई करतीं!)

मेरे हिसाब से तो बादल तभी गरजते हैं,
जब कुंभकर्ण दहाड़ता है,
वही कुंभकर्ण जो सिर्फ सोना चाहता है,
और बारिश उसकी नींद में बाधा डालती है।
कहो दीदी, ठीक कहा न मैंने?

शायद तुमने ठीक ही कहा,

पर मैंने तो अपनी किताबों में कुछ और ही पढ़ा है...।

बताओ न दीदी, क्या पढ़ा है आपने,

अपनी मोटी मोटी किताबों में?

पहले तुम बताओ मुन्ना,

तुम क्या सोचते हो?

मैं सोचता हूँ, मैं सोचता हूँ...
बोलो न मुन्ना क्या सोचा तुमने?
दीदी, ऐसा भी तो हो सकता है कि
आकाश में मोटर साइकिल चालकों का एक गुट है।
वह काले जैकट, स्टील से सजे जूते,
और सिनेमा के हीरो की तरह काले चश्मे पहने,
बारिश में मोटर साइकिल की दौड़ लगाते हैं।

जब वह अपनी मोटर साइकलि पर चढ़ कर
अपनी मोटर को झटके से शुरू करते हैं,
तब लोहे से लोहा टकराता है
और फरि बजिली गरिती है।
और, जब यही चालक अपनी मोटर साइकलि
घर्र-घर्र करके चलाते हैं,
तभी बादलों से गड़गड़ाहट की आवाज़ आती है।

मुझे लगता है दीदी,
बादलों के गरजने का कारण
न तो कुंभकर्ण, न तो हवाई जहाज़ है,
यह तो बारिश में होड़ लगाने वाले
मोटर साइकल चालकों की ही करामात है।
कहो न दीदी, हूँ न मैं समझदार?

अरे हाँ, समझदार तो तुम हो ही
और शायद ठीक भी,
पर कितिाबों से तो मैंने कुछ और ही सीखा है।
क्या सीखा है दीदी, बताओ तो?
मुन्ना पहले तुम बताओ। तुम क्या सोचते हो?

मुझे लगता है कि...
आसमान में रहने वाली
बूढ़ी दादी के पोता-पोती
जब बारिश के समय,
घर में रहकर बेचैन हो जाते हैं,
और ज़िद पर उतर आते हैं,
तब भी बूढ़ी दादी,
उन्हें बाहर जाने की इजाज़त नहीं देती है।

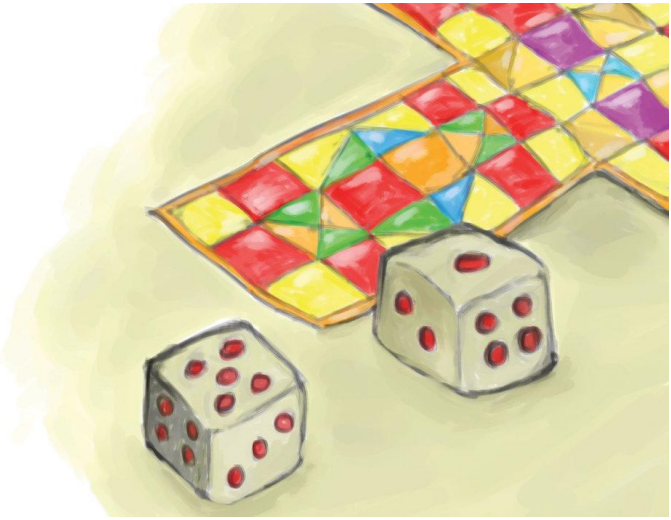

और उनका मन बहलाने के लिए
नए तरीके ढूँढती है,
तब वह चौपड़ और बड़ा-सा पासा निकालती है।
बच्चे उतावले होकर ज़ोर-ज़ोर से ताली बजाते हैं,
भूल जाते हैं कि वह कभी ऊबे भी थे।
मुझे लगता है कि जब वह बड़ा-सा पासा
आसमान में ज़ोरों से लुढ़कता है,
तब जो आवाज़ होती है,
उसी को बादलों की गड़गड़ाहट कहते हैं।
कैसा लगा, दीदी? ठीक कहा न मैंने?

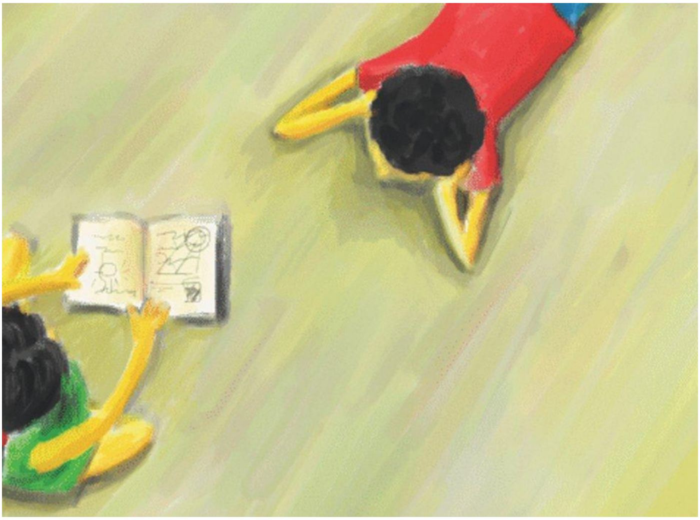

मुन्ने राजा, क्या कहने तुम्हारी बातों के,

पर मेरी किताबों में तो कुछ और ही लिखा है।

दीदी, बता दो क्या कहती हैं

तुम्हारी रंग बिरंगी किताबें?

बताती हूँ, बताती हूँ!

इधर आओ और ध्यान से सुनो

मैंने पढ़ा है कि...

क्या दीदी क्या...?

मेरी किताबों में लिखा है कि

बादलों का गरजना

बिजली के चमकने के बाद ही होता है।

पर यह तो तुम्हें भी मालूम है, है न?

और यह भी पता होगा कि

बिजली ही बादलों में गड़गड़ाहट पैदा करती है?

उन किताबों में लिखा है कि

आसमान की बिजली

हमारे घर की बिजली की तरह ही है,

वही बिजली जो हमारे पानी की मोटर चलाती है,

हमारे घरों में रोशनी करती है,

और हमारे टी.वी. में, एक ही बटन दबाने पर,

सचिन और सौरभ को दिखाती है।

पर दादी, तुम तो बिजली के बारे में बता रही हो,

मुझे तो बादलों की गड़गड़ाहट के बारे में समझना है।

बताती हूँ, बताती हूँ। थोड़ा धीरज रखो, मुन्ने राजा।

मेरी पुस्तक में यह भी लिखा है कि
बिजली बहुत गर्म होती है।
जब यह आसमान को चीरती हुई
धरती की तरफ़ बढ़ती है,
तो उसको छूने वाली हवा
बहुत गर्म हो उठती है।
और फिर, वही गर्म हवा
दीवाली के एक बम की तरह,
धमाके की आवाज़ के साथ
ज़ोर से फट जाती है।

और, इस तरह जब आसमान के बादल गरजते हैं
तो कुछ छोटे बच्चे
अपनी अम्मी की साड़ी के आँचल
में मुँह छुपा लेते हैं।
पर तुम्हारी तरह कुछ बहादुर बच्चे
जल्दी से अपनी दीदी की ओर मुड़कर पूछते हैं,
दीदी, दीदी, बादल क्यों गरजते हैं?

आओ कुछ और जानें:

प्रकृति में हर वस्तु छोटे-छोटे परमाणुओं से बनी है। हर एक परमाणु के बीच में एक नाभिक होता है, जिसमें दो प्रकार के कण होते हैं-प्रोटोन एवम् न्यूट्रॉन। नाभिक के चारों ओर इलेक्ट्रॉन घूमते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हमारी धरती सूर्य के चक्कर काटती है।

प्रोटोन और इलेक्ट्रॉन में आवेश होता है-प्रोटोन में घनात्मक और इलेक्ट्रॉन में ऋणात्मक। अब क्योंकि हर परमाणु में प्रोटोनों की संख्या और इलेक्ट्रॉनों की संख्या बराबर होती है, परमाणु अनावेषित होता है।

परन्तु जब दो परमाणु आपस में टकराते हैं तो कभी-कभी इलेक्ट्रॉनों का आदान-प्रदान हो जाता है। अब जिस परमाणु से इलेक्ट्रॉन निकल गए उसमें प्रोटोनों की मात्रा इलेक्ट्रॉनों से अधिक हो जाती है। अतः उस परमाणु में धन आवेश हो जाता है। इसी तरह, जिस परमाणु में इलेक्ट्रॉनों की संख्या प्रोटोनों से अधिक हो जाती है, उसमें ऋण आवेश हो जाता है। इन आवेश वाले परमाणुओं को आयन कहते हैं।

अब गरजते बादलों में, वायु बर्फ़ के टुकड़े और पानी की बूँदों को ऊपर की ओर ले जाती है। यह जब आपस में टकराते हैं तो इनके परमाणु आयन बन जाते हैं। अब धन आवेश वाले आयन हल्के होने की वजह से ऊपर उठते हैं और ऋण आवेश वाले आयन धरती की ओर, बादल के निचिले हिस्से की ओर जाते हैं।

प्रकृति का यह नियम है कि विपरीत आवेश एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। बादल के निचिले हिस्से वाले ऋण आयन धरती की सतह के धन आयनों को आकर्षित करते हैं। यह आयन एक दूसरे की ओर आते हैं ओर इसी से बिजली पैदा होती है-वही डरावनी बिजली, जो वर्षा के मौसम में अम्बर पर चमकती है।

यह बिजली, अपने चारों ओर की वायु को बेहद गर्म कर देती है-सूरज जितना गर्म! अब यह गर्म वायु, बहुत तेज़ी से फैलती है, बिल्कुल बम के धमाके की तरह और जब बिजली की चमक समाप्त हो जाती है, तो उतनी ही रफ्तार से सिकुड़ती है। इसी वायु के धमाके को हम बादलों के गर्जन के नाम से जानते हैं।

आओ एक चुम्बकीय गुब्बारा बनाएँ

हमें चाहिये-

एक गुब्बारा

एक ऊन के धागे का या रेशम

के धागे का टुकड़ा

एक दीवार

गुब्बारे को फुलाएँ और ऊन या रेशम को गुब्बारे पर रगड़ें। अब गुब्बारे को दीवार पर रखें ओर देखें कि गुब्बारा दीवार पर चपिक जाता है! ठीक वैसे ही जैसे चुम्बक के साथ लोहे का टुकड़ा।

ऐसा क्यों होता है-

गुब्बारे पर ऊन रगड़ने से, दोनों के बीच में इलेक्ट्रॉनों का आदान-प्रदान हो जाता है। गुब्बारे में इलेक्ट्रॉनों की मात्रा अधिक होने से उसमें ऋण आवेश हो जाता है। अब जब तुम इस गुब्बारे को दीवार पर लगाते हो, तो गुब्बारे के ऋण आयन दीवार के धन आयनों की ओर आकर्षित होते हैं और गुब्बारा दीवार पर चपिक जाता है।

PRATHAM BOOKS

storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link .

Story Attribution:

This story: दीदी, दीदी, बादल क्यों गरजते हैं? is translated by Shobhit Mahajan . The © for this translation lies with Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: ' Sister, Sister, Where Does Thunder Come From? ' , by Roopa Pai . © Pratham Books , 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book has been published on StoryWeaver by Pratham Books. Pratham Books is a not-for-profit organization that publishes books in multiple Indian languages to promote reading among children. www.prathambooks.org

Illustration Attributions:

Cover page: Thunder, lightning and clouds , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Boy in rain , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Demon in rain , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Angry man in rain , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Girl thinking , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Man on bike , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Man on bike in rain , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Man on bike in rain , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Thinking boy , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Angry children , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

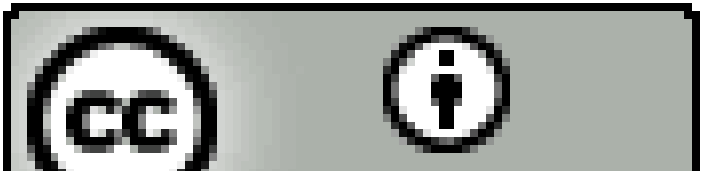

Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link .

Illustration Attributions:

Page 11: Board and dice game , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Girl reading and boy listening , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Cloud, sky and lightning , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Lightning, cloud and sky , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Bolt of light and electricity , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Bolt of electricity and light , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved.

Released under CC BY 4.0 license. Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

दीदी, दीदी, बादल क्यों गरजते हैं? (Hindi)

दीदी से पूछने के लिये मुन्ने राजा के मन में न जाने कितने सवाल उठते रहते हैं। दीदी के पास जवाब हमेशा मिलते हैं क्योंकि वह हर समय कोई न कोई मोटी सी किताब पढ़ती रहती है। यहाँ मुन्ने राजा सोच रहे हैं कि बादल गरजते क्यों हैं? क्या कोई राक्षस गुस्से में हुंकार रहा है या बादलों में रहने वाले मोटर साइकिल चालक ज़ोर-ज़ोर से मोटर साइकिल चला रहे हैं? दीदी अन्त में सही उत्तर दे देती है पर मुन्ने राजा के मज़ेदार जवाब भी पढ़ने लायक हैं।आप भी बताइये आपको क्या लगता है बादल क्यों गरजते हैं?

यह पठन स्तर ३ की किताब है, उन बच्चों के लिए जो खुद पढ़ने को तैयार हैं।

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India -- and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!